उत्तर

HINDI A

Class 10 - हिंदी ए

खंड क - अपठित बोध

1. 1. iii. कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   2. iii. केवल I, III और IV सही हैं।
   3. i. I (1) II (2) III (3)
   4. वन्य पशुओं में अनुशासन का कोई महत्व नहीं होता, जिसके कारण उनका जीवन असुरक्षित, आतंकित एवं अव्यवस्थित रहता है।
   5. कुछ लोगों का मानना है कि मानव के सभ्य और शिक्षित हो जाने के कारण उस पर किसी प्रकार के नियमों का बंधन नहीं होना चाहिए। वह स्वतंत्र रूप से जो करे, उसे करने देना चाहिए।
2. i. (घ) आज के मानव के आदर्श लोभ, लालच, धन का उपार्जन ही हैं।
   ii. (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   iii. (क) केवल I, III और IV सही हैं।
   iv. आजकल लोगों का मन, शरीर एवं आत्मा सब पराई हो चुकी है ऐसी स्थिति में आत्मा के द्वारा सच्ची सीख दिए जाने के कारण उसकी आवाज को धन लोलुप ने पागलपन कहा है।
   v. वर्तमान में लोगों का कण-कण भावहीन हो गया है। शरीर, मन, आत्मा सब पराई हो गयी है। भ्रष्टाचार में डूब कर वह केवल धन को अपना मानता है।

खंड ख - व्यावहारिक व्याकरण

3. i. गौरैया ने तिनका-तिनका जोड़ा और घर बनाया।
   ii. हम फ़िल्म देखने के लिए सिनेमाघर गए।
   iii. जो झूठ बोलते हैं, उन पर कोई विश्वास नहीं करता।
   iv. रेखांकित उपवाक्य का भेद: संज्ञा उपवाक्य।
   v. मोहनदास, गोकुलदास सामान निकालते थे और उसे बाहर रखते जाते थे। (संयुक्त वाक्य)
4. i. कर्मवाच्य: रीड नरकट से बनाई जाती है।
   ii. कर्तृवाच्य: सीट के नीचे से लोटा उठाया।
   iii. भाववाच्य: उससे चला नहीं जा रहा था।
   iv. भाववाच्य: आओ, बैठा जाए।
   v. कर्मवाच्य: मुँह में भर आए पानी का घूँट गले में उतार लिया गया।
5. i. **थोड़ी-** परिमाणवाचक विशेषण, विशेष्य जमीन, स्त्रीलिंग, एकवचन।
      परिमाणवाचक विशेषण,एकवचन, स्त्रीलिंग, विशेष्य -'जमीन'।
   ii. **शांति-** भाववाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, करणकारक, एकवचन।
      भाववाचक संज्ञा ,एकवचन ,स्त्रीलिंग ,करण कारक।
   iii. **जब-** कालवाचक क्रियाविशेषण, 'आता' क्रिया की विशेषता।
   iv. **कमली-** जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक।
   v. **धीरे-धीरे-** अव्यय, क्रियाविशेषण, रीतिवाचक चलता है क्रिया विशेषण।
      अव्यय, रीतिवाचक क्रिया विशेषण,('चलताा है' क्रिया की रीति बताता है)
6. i. रूपक अलंकार
   ii. उपमा अलंकार
   iii. उत्प्रेक्षा अलंकार
   iv. मानवीकरण अलंकार
   v. उत्प्रेक्षा अलंकार

खंड ग - गद्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

7. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

पानवाले के लिए यह एक मजेदार बात थी लेकिन हालदार साहब के लिए चकित और द्रवित करने वाली। यानी वह ठीक ही सोच रहे थे। मूर्ति के नीचे लिखा 'मूर्तिकार मास्टर मोतीलाल' वाकई कस्बे का अध्यापक था। बेचारे ने महीने-भर में मूर्ति बनाकर पटक देने का वादा कर दिया होगा। बना भी ली होगी लेकिन पत्थर में पारदर्शी चश्मा कैसे बनाया जाए - काँचवाला - यह तय नहीं कर पाया होगा। या कोशिश की होगी और असफल रहा होगा। या बनाते-बनाते 'कुछ और बारीकी' के चक्कर में चश्मा टूट गया होगा। या पत्थर का चश्मा अलग से बनाकर फिट किया होगा और वह निकल गया होगा। उफ़.....!

(i) **(ग)** मूर्ति पर चश्मा न होना
व्याख्या:
मूर्ति पर चश्मा न होना

SATISH SCIENCE ACADEMY

(ii) **(ग)** क्योंकि वह मूर्ति पर चश्मा नहीं लगा पाया था
व्याख्या:
क्योंकि वह मूर्ति पर चश्मा नहीं लगा पाया था

(iii) **(क)** मूर्ति का अच्छा नहीं होना
व्याख्या:
मूर्ति का अच्छा नहीं होना

(iv) **(क)** विकल्प (ii)
व्याख्या:
विकल्प (ii)

(v) **(ग)** चकित और द्रवित
व्याख्या:
चकित और द्रवित

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:

(i) गंगा-स्नान के लिए आने-जाने के दौरान चार-पाँच दिनों तक बालगोबिन भगत उपवास इसलिए रखते थे क्योंकि उन्होंने अपनी आस्था और आदर्शों के अनुसार यह मान्यता बनाई थी कि गृहस्थ को दूसरों से माँगना नहीं चाहिए। बालगोबिन भगत का मानना था कि साधु को संबल की आवश्यकता नहीं होती और उन्होंने संयमपूर्ण जीवनशैली का पालन किया। यह उनकी नियमों के प्रति पक्के होने और स्वाभिमान को भी दर्शाता है, जिससे वे अपनी धार्मिक यात्रा के दौरान आत्म-निर्भर और संयमित रह सके।

(ii) काशी में संगीत और अदब की बहुत सी परंपराएँ लुप्त हो गई हैं। हिंदू और मुस्लिम समुदायों में पहले जैसा भाईचारा नहीं है। यह परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को दुःखी करते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि संगीतकारों को गायकों वैसा सम्मान नहीं मिल रहा है।

(iii) नवाब साहब ने खीरे नहीं खाए क्योंकि वे लखनवी अंदाज़ के मुताबिक शानदार और मेहनती खाने की परम्परा को ध्यान में रखते थे और खीरे को अपने स्थान से बाहर मानते थे।

(iv) सुसंस्कृत व्यक्ति वह है जो अपनी प्रवृत्ति, योग्यता और प्रेरणा के बल पर नवाचार कर सके। इसके साथ ही, वह व्यक्ति जो नि:स्वार्थ त्याग की भावना रखता है और लोककल्याण की दिशा में कार्य करता है, उसे भी सुसंस्कृत माना जाता है। ऐसे व्यक्ति अपनी संस्कृति और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए, नए दृष्टिकोण और विचारों को समाज में लागू करते हैं।

खंड ग - काव्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी॥
पुनि-पुनि मोहि देखाव कुठारु। चहत उड़ावन फूँकि पहारू॥
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं।
देखि कुठारु सरासन बाना। मछु कहा सहित अभिमाना॥
भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कुछ कहहु सहों रिस रोकी॥
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई॥
बधें पापु अपकीरति हारें। मारतहू पा परिअ तुम्हारें।
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा॥

(i) **(क)** काशीफल को फल के समान कमजोर समझ रहे हैं।
व्याख्या:
काशीफल को फल के समान कमजोर समझ रहे हैं।

(ii) **(घ)** उन्हें बार-बार फरसा दिखाकर डराने की
व्याख्या:
उन्हें बार-बार फरसा दिखाकर डराने की

(iii) **(क)** ब्राह्मणों से पराजित होने पर अपयश मिलता है तथा परिवार की परम्परा भी नहीं है
व्याख्या:
ब्राह्मणों से पराजित होने पर अपयश मिलता है तथा परिवार की परम्परा भी नहीं है

(iv) **(क)** कुल में ब्राह्मण को अवध्य माना जाता था
व्याख्या:
कुल में ब्राह्मण को अवध्य माना जाता था

(v) **(ख)** गाय, भक्त, ब्राह्मण और देवताओं पर
व्याख्या:
गाय, भक्त, ब्राह्मण और देवताओं पर

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:

SATISH SINGH ACADEMY

(i) निराला जी छायावाद के प्रमुख कवि माने जाते हैं। छायावाद की प्रमुख विशेषताएँ हैं-प्रकृति चित्रण और प्राकृतिक उपादानों का मानवीकरण। 'उत्साह' और 'अट नहीं रही है' दोनों ही कविताओं में प्राकृतिक उपादानों का चित्रण और मानवीकरण हुआ है। काव्य के दोनों पक्ष (भाव पक्ष और शिल्प पक्ष) सराहनीय हैं। छायावाद की अन्य विशेषताएँ जैसे गेयताछाया, प्रवाहमयता, अलंकार योजना आदि भी देखने को मिलती हैं। भाषा एक ओर जहाँ संस्कृतनिष्ठ, सामासिक और आलंकारिक है तो वहीं दूसरी ओर ठेठ ग्रामीण शब्दों का प्रयोग भी दर्शनीय है। भाषा सरल, सहज और प्रवाहमयी है। अतुकांत शैली का भी प्रयोग किया गया है।

(ii) फसल के लिये पानी बेहद आवश्यक है। नदियाँ अपने साथ जो खनिज बहाकर लाती हैं वे उनके पानी को अमृत बना देते हैं जो किसी जादू की भाँति फसलों में आकार, रस, गंध, स्वाद आदि की भिन्नता पैदा करते हैं। इसमें अनेक व्यक्तियों के परिश्रम तथा सेवा के साथ-साथ बीज-खाद व मिट्टी का भी योगदान होता है। विभिन्न प्रकार की मिट्टियों की विशेषताओं के अनुसार फसलों का स्वरूप बनता है। अतः फसल इन सबके सम्मिलित योगदान की महिमा है।

(iii) सफलता के शिखर पर पहुँच कर यदि व्यक्ति लड़खड़ाने लग जाता है तो इसके सहयोगी अपने सुझावों द्वारा उसके कदमों को नई दिशा देते हैं, अपने सांत्वना पूर्ण वचनों द्वारा इसके विचलित मन को सँभालते हैं तथा उसका मार्गदर्शन करते हैं। उसकी खोई आत्मशक्ति को एकत्र कर फिर से उठने की हिम्मत देते हैं। वे अपना पूरा प्रयास उसके लिए लगा देते हैं। वे उसकी कमी को पूरा करने का भरसक प्रयास करते हैं। स्वयं आगे आकर सुरक्षा कवच बनकर उसके पौरुष की प्रशंसा करते हैं।

(iv) आत्मकथा सुनाने के लिए कवि वर्तमान को इसलिए उपयुक्त नहीं मानता है क्योंकि जीवन में मिली गहरी पीड़ा उसने अकेले ही सहा है। इस पीड़ा की स्मृतियाँ बड़ी कठिनाई से धुँधली पड़ी हैं। आत्मकथा सुनाते समय उसे एक बार पुनः याद करना होगा, जिससे उसका घाव हरा हो जाएगा जो उसके लिए कष्टप्रद होगा।

खंड ग - कृतिका (पूरक पाठ्यपुस्तक)

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए:

(i) पाठ में वर्णित खेल खिलौने आज देखने में ही नहीं आते। आज न तो किसी के पास समय है और न ही वो पहले वाली निश्छल मस्ती। सभी अपने-अपने बच्चों को बचपन से ही कमाऊ पूत बनाने में लगे हुआ हैं। पहले माता-पिता अपने बच्चों को समय देते थे। उनके निश्छल प्यार और लगाव को पाकर बच्चे खिल उठते थे, वे उनके साथ बच्चा बन जाते थे परन्तु आज माता-पिता पैसे कमाने की दौड़ में इतना आगे निकल चुके हैं कि उनके पास अपने बच्चों के लिए भी समय नहीं होता। वे अपने बच्चों का कमरा तो खिलौनों से भर देते हैं, पर उनका मन खाली ही रह जाता है। अतः बच्चों को वो प्यार नहीं मिलता जो पहले मिलता था।

(ii) लेखक जापान घूमने गया था तो हिरोशिमा में उस विस्फोट से पीड़ित लोगों को देखकर उसे थोड़ी पीड़ा हुई परन्तु उसका मन लिखने के लिए उसे प्रेरित नहीं कर पा रहा था। हिरोशिमा के पीड़ितों को देखकर लेखक को पहले ही अनुभव हो चुका था परन्तु जले पत्थर पर किसी व्यक्ति की उजली छाया ने उसको हिरोशिमा में विस्फोट से प्रभावित लोगों के दर्द की अनुभूति कराई, लेखक को लिखने के लिए प्रेरित किया। इस तरह हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अंतः व बाह्य दोनों दबाव का परिणाम है।

(iii) लेखिका की मुलाकात फौजी से बॉर्डर क्षेत्र में हुई। यहाँ चीन की सीमा भारत से लगती है। देश की सुरक्षा के लिए इन फौजियों को कड़कड़ाती ठण्ड में पहरा देना होता है ताकि देश का हर नागरिक चैन की नींद सो सकें। सर्दी-गर्मी-बरसात की परवाह न करते हुए ये फौजी लगातार अपना कर्तव्य निभाते हैं।

एक आम नागरिक का उनके प्रति ये कर्तव्य होने चाहिए कि हम उनका सम्मान करें, उनके परिवारजनों को आदर-सम्मान दे और आवश्यकता पड़ने पर उनकी सहायता करें। देश के प्रति अपने कर्तव्यों का उचित निर्वाह करें।

खंड घ - रचनात्मक लेखन

12. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लिखिये:

(i) वास्तव में परीक्षा के दिन कठिन उन विद्यार्थियों के लिए होते हैं, जो परीक्षा से जूझने के लिए, परीक्षा में खरा उतरने के लिए, पहले से ही समय के साथ-साथ तैयारी नहीं करते। जो विद्यार्थी प्रतिदिन की कक्षाओं के साथ-साथ परीक्षा की तैयारी भी करते जाते हैं, उन्हें परीक्षा का सामना करने से डर नहीं लगता। वे तो परीक्षा का इंतजार करते हैं। उन्हें परीक्षा के दिन कठिन नहीं, सुखद लगते हैं। वे परीक्षा की कसौटी पर खरा उतरना चाहते हैं और खरा उतरना जानते भी हैं, क्योंकि जिस प्रकार सोने को कसौटी पर परखा जाता है, उसी प्रकार विद्यार्थी की योग्यता की परख परीक्षा की कसौटी पर होती है। यही एक प्रत्यक्ष प्रमाण या मापदण्ड होता है, जिससे परीक्षार्थी के योग्यता-स्तर को जाँच कर उसे अगली कक्षा में प्रवेश के लिए या नौकरी के योग्य समझा जाता है।

परीक्षा तो विद्यार्थियों को गंभीरतापूर्वक अध्ययन करने के लिए कहती है। परीक्षा में अधिकाधिक अंक प्राप्त करने के लिए प्रतिभाशाली विद्यार्थी परीक्षा की डटकर तैयारी करते हैं, उन्हें परीक्षा से डर नहीं लगता। परीक्षा विद्यार्थियों में स्पर्धा की भावना भरती है तथा उनकी आलसी प्रवृत्ति को झकझोर कर परिश्रम करने में सहायक बनती है। परीक्षा तो परीक्षा ही होती है। पर परीक्षा-पद्धति ऐसी होनी चाहिए, जिससे विद्यार्थी की शिक्षा का मूल उद्देश्य पूरा हो, उसकी योग्यता की सही जाँच हो और उसे परीक्षा के दिन कठिन न लगें। इसके लिए सार्थक प्रयास करने होंगे और ये प्रयास तभी सफल होंगे, जब उन्हें सुनियोजित योजना के तहत लागू किया जाएगा।

(ii) विशिष्ट रीति से जो ज्ञान पाया जाता है, उसे विज्ञान कहा जाता है। आज की इस भौतिकवादी दुनिया ने विज्ञान द्वारा संसार का ढाँचा ही बदल दिया है। सभी राष्ट्र औद्योगिक क्रान्ति की ओर अग्रसर हैं। उनके इस विकासशील रूप को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि आज का युग यन्त्र का युग है। जिधर देखो गगनचुम्बी चिमनियाँ, बड़े-बड़े कल-कारखाने, पृथ्वी को सुशोभित कर, राष्ट्र की समृद्धि का गुणगान कर रहे हैं। विज्ञान के चमत्कार आश्चर्यजनक हैं। यातायात, संचार के नये-नये साधन, बड़े-बड़े कल-कारखानों में नाना वस्तुओं का मशीनों से निर्माण, कृषि के क्षेत्र में क्रान्ति, मानव स्वास्थ्य और आयु वृद्धि के उपायों की खोज, फोटोग्राफी, सिनेमा आदि के द्वारा कला और मनोरंजन के साधनों का विकास, टी.वी., कम्प्यूटर, इंटरनेट, अन्तरिक्ष में मानव यात्रा, परमाणु शक्ति का मानव-कल्याण में उपयोग आदि विज्ञान की नाना उपलब्धियों ने धरती पर जैसे स्वर्ग ही उतार दिया है। विज्ञान ने मानव को अनेकानेक लाभ पहुँचाकर उसका अनन्त उपकार किया है। यन्त्रों के विकास के कारण मनुष्य के समय और श्रम की बहुत बचत हो गयी है। इनका उपयोग अब वह जीवन को और अधिक सुखमय बनाने के लिए कर सकता है। धरती की

SATISH SCIENCE ACADEMY

भौगोलिक दूरियाँ मिट जाने से विश्व-बन्धुत्व की भावना को बल मिला है। एक देश की घटना दूसरे देश को तुरन्त प्रभावित करती है। किसी देश में भयंकर तबाही होने से अनेक राष्ट्रों से तुरंत सहायता पहुँचने लगती है।

विज्ञान ने हमें भयंकर रोगों से मुक्ति दिलाई है। बाढ़, अकाल, महामारी आदि पर नियन्त्रण करके लाखों मनुष्यों को प्रकृति के प्रकोप का शिकार होने से बचा लिया जाता है। विज्ञान ने हमें अनेक भौतिक सुख-सुविधाएँ प्रदान की हैं। इनकी गणना कर पाना असम्भव है। वैभव और विलास की अनन्त सामग्री जुटाकर विज्ञान ने धरती पर स्वर्ग ला दिया है। विज्ञान ने मनुष्य के हाथों में असीम शक्ति भर दी है। ज्ञान के नये-नये क्षितिज खोल दिये हैं। उसने भूखे को रोटी और नंगे को वस्त्र दिये हैं। अन्धे को आँखें दी हैं, लंगड़े को पर्वत लाँघने की शक्ति दी है। वह निर्धन का धन व निर्बल का बल है। उसकी कृपा से ' मूक होंहि वाचाल, पंगु चढ़हिं गिरिवर गहन।' की उक्ति सार्थक हुई है।

(iii) **समाचार-पत्रों का कोई विकल्प नहीं**

समाचार-पत्रों का महत्व वर्तमान समय में अधिक है। वर्तमानकाल में यदि संसार के किसी भी कोने में कोई घटना घटित हो तो उसके अगले दिन हमारे पास उसकी खबर आ जाती हैं। आज के समय में बिना समाचारपत्र के जीवन की कल्पना करना भी काफ़ी कठिन है। ये समाचार-पत्र हमें विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी देते हैं, जैसे कि राजनीति, समाज, व्यापार, विज्ञान, विद्या, खेल, तकनीक, मनोरंजन आदि। इनसे हमारा ज्ञान कौशल बढ़ता है और हम विश्वासयोग्य जानकार बनते हैं। समाचार-पत्र हमें आस-पास के हालातों के बारे में जागरूक रखते हैं और साथ ही व्यापार, करियर, शिक्षा, आर्थिक विकास के बारे में सूचनाएँ भी प्रदान करते हैं। समाचार पत्र कई प्रकार के होते है - प्रादेशिक या क्षेत्रीय समाचार, राष्ट्रीय समाचार, अंतर्राष्ट्रीय समाचार विशिष्ट समाचार, व्यापी समाचार, डायरी समाचार, सनसनीखेज समाचार। समाचार-पत्र न केवल आस-पास के क्षेत्र के बारे में जानकारी देता है, बल्कि शब्दावली में सुधार सामान्य जानकारी को उन्नत करने और मनोरंजन प्रदान करने सहित कई लाभ प्रदान करता है। ये बिना बड़े खर्च के हमें नवीनतम जानकारी देते हैं और हमारे विचारों और सोच को संवारते हैं। समाचार-पत्र लोगों के जीवन को आसान बनाते हैं, उन्हें जागरूक रखते हैं और उनके दिल में विभिन्न अनुभवों को जगाते हैं। इसलिए, समाचार-पत्रों को समझना, पढ़ना और उनसे अवगत होना बहुत महत्वपूर्ण है।

13. परीक्षा भवन
श्रीगोविन्दम् विद्यालय
गोविन्द नगर
दिनांक- 21/08/2020
सेवा में
नगर निगम अधिकारी
क. ख. ग. नगर पालिका
गोविन्द नगर
विषय- पार्क में खोमचे वालों को हटाने हेतु पत्र
महोदय,
मैं गोविन्द नगर का रहने वाला हूँ तथा वार्ड की स्वच्छता समिति का अध्यक्ष हूँ। मैं आपका ध्यान बस्ती के पार्क में खोमचे वालों द्वारा अनधिकृत डेरा डालने की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। दिन-प्रतिदिन पार्क की स्थिति खराब होती जा रही है। बच्चों को खेलने और बड़े-बूढ़ों को टहलने के लिए जगह नहीं मिल रही है। वे लोग इस पार्क में कचरा फेंक कर इस पार्क को दूषित कर रहे हैं, इसी कारण से विभिन्न पर्यटक जो यहां हर रोज आते हैं तथा इस पार्क की सराहना करते हैं वह भी आजकल दिखाई नहीं पड़ते। इसी कारण से पार्क मैं कुछ दिनों से सन्नाटा छाया हुआ है। यदि इन्हें समझाने का प्रयास किया जाए तो ये लड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं।
महोदय, गोविन्द नगर, वार्ड की स्वच्छता समिति का सुझाव है कि बस्ती के पार्क से खोमचे वालों को हटाने के लिए व्यापक अभियान चलाया जाए। यदि आवश्यक हो तो इनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही भी की जाए। इससे समस्त निवासियों को लाभ मिलेगा और हमारा पर्यावरण भी प्रदूषण मुक्त हो जाएगा। इसके लिए हम सदैव आपके आभारी रहेंगे।
सधन्यवाद
आपका निवासी
गिरीश सिंह प्रधान

अथवा

45/5, स्वरूप नगर
दिल्ली
दिनांक : 05 मार्च, 2019
प्रिय संजना
शुभाशीष,
तुम छात्रावास में रहती हो वहाँ कई प्रकार की छात्राएँ रहती हैं। अक्सर लड़कियाँ अपने बनाव श्रृंगार में समय व्यतीत किया करती हैं, क्योंकि प्रत्येक लड़की यही चाहती है कि वह अधिक से अधिक आकर्षक दिखाई दे, यह स्वाभाविक है पर सारा ध्यान इसी ओर केन्द्रित करना उचित नहीं है। स्वस्थ शरीर स्वयं ही आकर्षण का केन्द्र होता है। अतः तुम अपने को पूर्ण स्वस्थ दिखाने का प्रयास करो। यही तुम्हारा श्रृंगार होगा। श्रृंगार में समय मत बर्बाद करो। अपना अधिक समय पढ़ने-लिखने में लगाना ही तुम्हारे लिए उचित होगा। आशा है तुम मेरी बात पर गौर फरमाओगी।
तुम्हारी अपनी ही,
चंचल

14. प्रति,
प्रबंधक महोदय

SATISH SCIENCE ACADEMY

‘साथी’ स्वयंसेवी संस्था
आलमबाग, लखनऊ (उ० प्र०)।
विषय-स्वयंसेवी की भर्ती के संबंध में।
मान्यवर,
दिनांक 05 मई, 2019 को लखनऊ से प्रकाशित ‘अमर उजाला’ समाचार-पत्र में छपे विज्ञापन से ज्ञात हुआ कि आपकी संस्था को एड्स के बारे जागरूकता का प्रचार-प्रसार करने के लिए स्वयं सेवियों की जरूरत है। मैंने एड्स के विषय में बहुत गहन अध्ययन किया है और इसके बारे में मुझे अत्याधिक जानकारी भी है। इसलिए इस संबंध में अपना आवेदन-पत्र प्रस्तुत कर रहा है, जिसका संक्षिप्त व्यक्तिगत विवरण निम्नलिखित है-
नाम - कुलवन्त सिंह
पिता का नाम - श्री धीरज सिंह
जन्मतिथि - 19 मार्च, 1991
पता - ग्राम-रामपुर, पो०-ऊँचहरा, जनपद-उन्नाव (उ० प्र०)।
शैक्षणिक योग्यताएँ-

दसवीं कक्षा	मा० शि० प० इलाहाबाद उ० प्र०	2007	63%
बारहवीं कक्षा	मा० शि० प० इलाहाबाद उ० प्र०	2009	72%
बी.ए.	लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ	2012	66%
लोकसंपर्क में द्विवर्षीय डिप्लोमा	लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ	2014	प्रथम श्रेणी

अनुभव- 'सहयोग' संस्था में एक वर्ष का कार्यानुभव।
आशा है कि आप सेवा का अवसर प्रदान कर कृतार्थ करेंगे।
सधन्यवाद
प्रार्थी
कुलवन्त सिंह
दिनांक 08 फरवरी, 2019
संलग्न- शैक्षणिक एवं अनुभव प्रमाण-पत्रों की छायांकित प्रति।

अथवा

प्रेषक (From) : dinesh@gmail.com
प्रेषिती (To) : jalvibhag@gmail.com
विषय – हमारे मुहल्ले में जल आपूर्ति उपलब्ध कराने के संबंध में
अध्यक्ष महोदय,
मेरा नाम दिनेश है मैं महामाया कॉलोनी, वार्ड क्र.-12, रायपुर (छ.ग.) का रहने वाला हूँ हमारे वार्ड या मोहल्ले में जल की आपूर्ति पिछले तीन दिनों से बाधित है जिसकी वजह से मोहल्ले वासियों को बहुत परेशानियां उठानी पड़ रही है आप तो जानते हैं कि जल का उपयोग दैनिक जीवन में कितना ज़रूरी है
अतः आपसे अनुरोध है कि जल की आपूर्ति सुचारू रूप से करने की कृपा करें ताकि जल संकट की कोई समस्या से मोहल्ले वासियों को जूझना न पड़े इस नेक कार्य के लिए हम सदा आपके आभारी रहेंगे धन्यवाद
भवदीय
दिनेश
महामाया कॉलोनी, वार्ड क्र.-12,
रायपुर (छ.ग.)
8 जून, 2024

15.

सेल सेल सेल

रूपम कॉस्मेटिक
सदर बाज़ार, दिल्ली

हमारे यहाँ चूड़ियाँ, क्रीम, मेंहदी इत्यादि श्रृंगार से संबंधी सभी सामान उचित दामों पर उपलब्ध है।
हमारी विशेषताएँ:

- सभी प्रकार के ब्राडेड उत्पाद।
- ऑनलाइन पेमेंट की सुविधा।
- फोन पर भी ऑर्डर कर सकते है।
- होम डिलीवरी की सुविधा भी उपलब्ध।

हर खरीदारी पर 10% छूट

खरीदने के इच्छुक व्यक्ति कृपया संपर्क करें।
फोन नंबर - 998822XXXX

अथवा

SATISH SCIENCE ACADEMY

संदेश

12 अक्तूबर 2020
प्रातः 10:30 बजे
आदरणीय माता जी,
कुछ समय पहले शर्मा अंकल जी का फोन आया था। आप घर पर उपस्थित नहीं थी। मैंने फोन उठाया, उन्होंने कहा की जैसे ही आप आएँ मुझसे फोन पर बात अवश्य करें। हाँ, उन्होंने यह भी कहा है कि आपके ईमेल पर कुछ संदेश है, उसे अवश्य पढ़ लें।
गिरीश

SATISH SCIENCE ACADEMY